साहित्यशास्त्र

सत्र – V पेपर नं – IIIV

डॉ.क्षितिज यादवराव धुमाळ
सदस्य हिंदी अध्ययन मंडल
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

ईकाई – 1

काव्य/साहित्य : स्वरुप, तत्त्व, प्रकार, प्रयोजन

साहित्य/काव्य का स्वरुप

संस्कृत आचार्यो के काव्य लक्षण

आचार्य रुद्रट :

“ननु शब्दार्थौ काव्यम्!”

- **आचार्य पंडितराज जगन्नाथ :**

  “रमणीयार्थ प्रतिपादक : शब्द : काव्यम्|

  प्राचीन हिंदी आचार्यो के काव्य लक्षण :

- **आचार्य कुलपती मिश्र :**

  “जगत अद्‌भुत सुख सदन, शब्दरु अर्थ कवित्त|

  यह लंच्छन मैने कियो, समुझि, ग्रंथ बहु चित्त||”

- **आचार्य चिंतामणी :**

  “सगुण अलंकारन सहित, दोषरहित जो होई|

  शब्द अर्थ वारी विबुध कहत सब कोई||”

- **आधुनिक हिंदी विद्वानों के काव्य लक्षण :**
- **श्यामसुंदर दास :**

  “काव्य वह है जो हृदय में अलौकिक आनंद व चमत्कार कि श्रुष्टी करें|”
- **सुमित्रानंदन पंत :**

  “काव्य हमारे परिपूर्ण क्षणों की वाणी है|”
- **पश्चात विद्वानों के काव्य लक्षण :**
- **ड्रायडन (Dryden) –**

  Poetry is articulate music”
- **कॉलरिज –**

  Poetry is the best words in their best order”

- **काव्य /साहित्य तत्त्व :**
    1. **भावतत्त्व**
    2. **कल्पना तत्त्व**
    3. **बुद्धी तत्त्व**
    4. **शैली तत्त्व**
- **काव्य प्रयोजन :**
    1. **संस्कृत आचार्य : काव्य प्रयोजन**
    2. **प्राचीन हिंदी आचार्य : काव्य प्रयोजन**
    3. **आधुनिक हिंदी विद्वान : काव्य प्रयोजन**
    4. **पाश्चात्य काव्यशास्त्र में काव्य प्रयोजन**

काव्य साहित्य के प्रकार

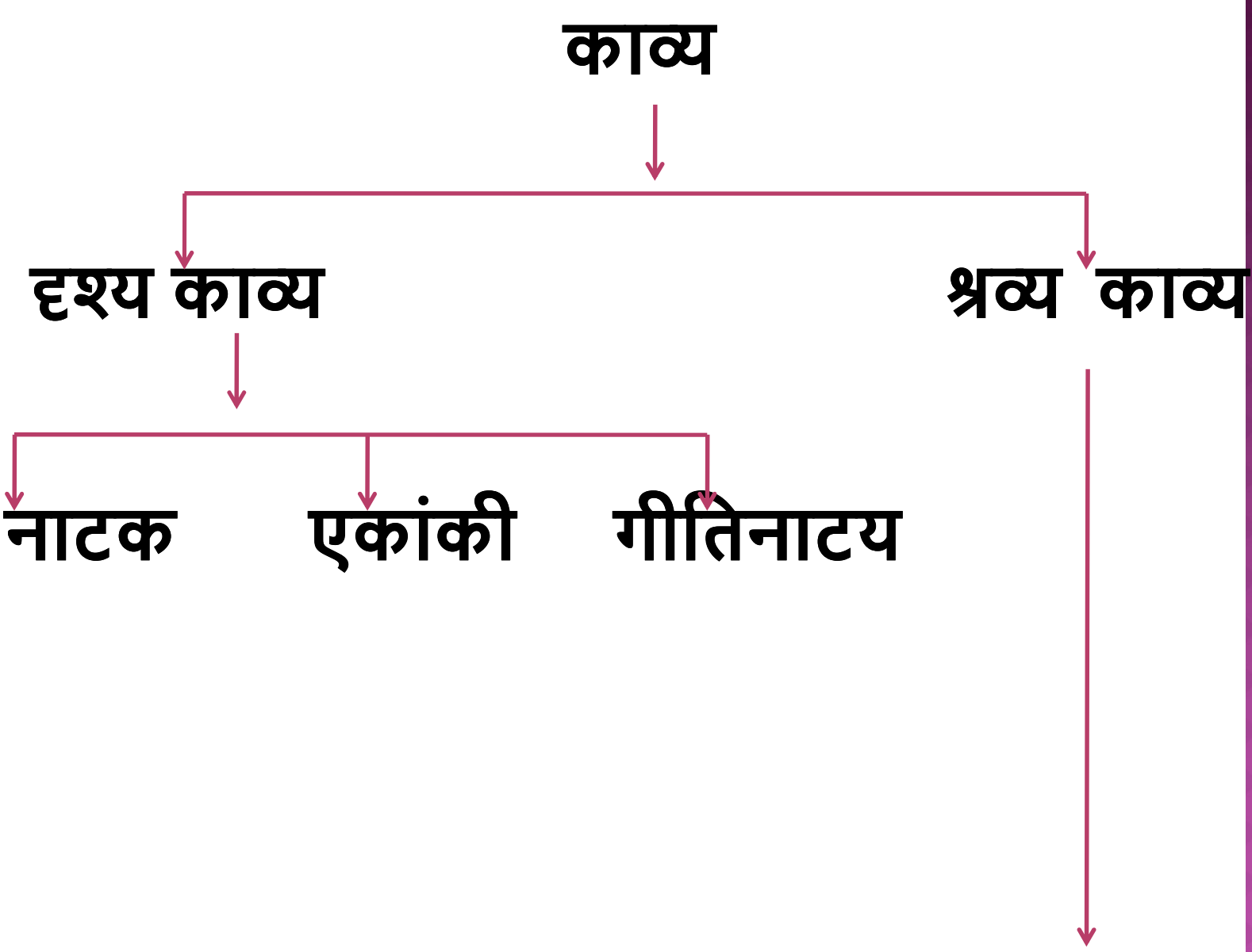

गद्य पद्य चंपू (गद्य-पद्य)

उपन्यास

कहानी प्रबंध काव्य मुक्तक काव्य

निबंध

रेखाचित्र पाठ्य मुक्तक गेयकाव्य (गीतिकाव्य)

संस्मरण

जीवनी

आत्मकथा महाकाव्य खंडकाव्य एकार्थ काव्य

रिपोर्ताज

यात्रा साहित्य

साक्षात्कार

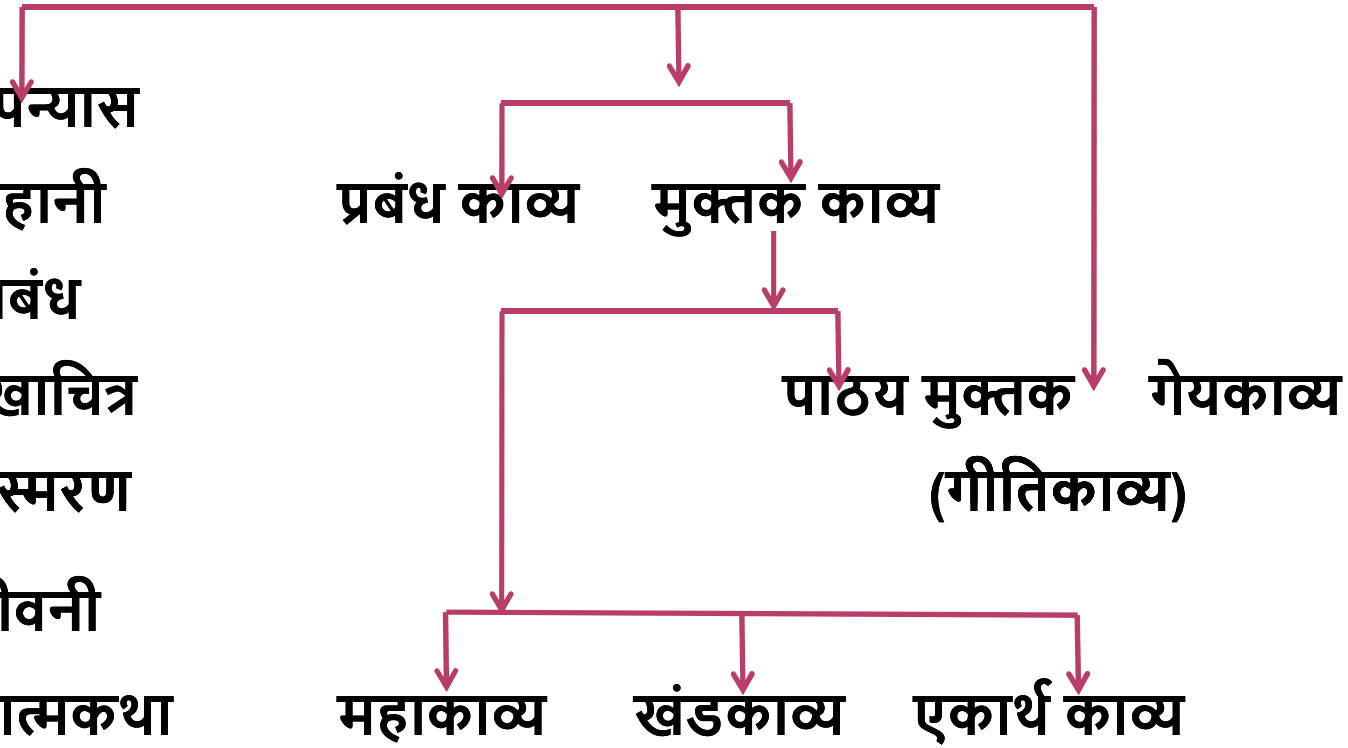

ईकाई – 2

- शब्दशक्ति, काव्यगुण, काव्यदोष
- शब्दशक्ति से तात्पर्य :
- शब्दशक्ति के भेद:
  - अभिधा शब्दशक्ति
  - लक्षणा शब्दशक्ति
  - व्यंजना शब्दशक्ति

- **काव्य गुण:**
  - ✓ **माधुर्य गुण**
  - ✓ **ओज गुण**
  - ✓ **प्रसाद गुण**
- **काव्य दोष:**
  - ✓ **पद्गत दोष (पद दोष)**
  - ✓ **अर्थगत दोष (अर्थ दोष)**
  - ✓ **रसगत दोष (रस दोष)**

ईकाई – 3

रस : परिभाषा, भेद, अंग

रस : स्वरूप (परिभाषा)

आ. भरतमुनि :

"विभावानुभावव्यभिचारी संयोगा द्रस निष्पत्ति:"

आ. रामचंद्र शुक्ल :

सत्त्वोद्रेक या हृदय की मुक्तावस्था ही रस है|

- **रस की विशेषताएँ :**
- **रस के अंग :**
  - **स्थायीभाव**
  - **विभाव**
  - **अनुभाव**
  - **व्यभिचारी भाव**

❖ रस की संख्या :

स्थायीभाव	रस
रति	श्रृंगार रस
उत्साह	वीर रस
हास	हास्य रस
क्रोध	रौद्र रस
भय	भयानक रस
जुगुप्सा	बीभत्स रस
शोक	करून रस
विस्मय	अद्‌भुत रस
निर्भेद	शांत रस
वत्सल	वात्सल्य रस
भगवत प्रेम	भक्ति रस

धन्यवाद!